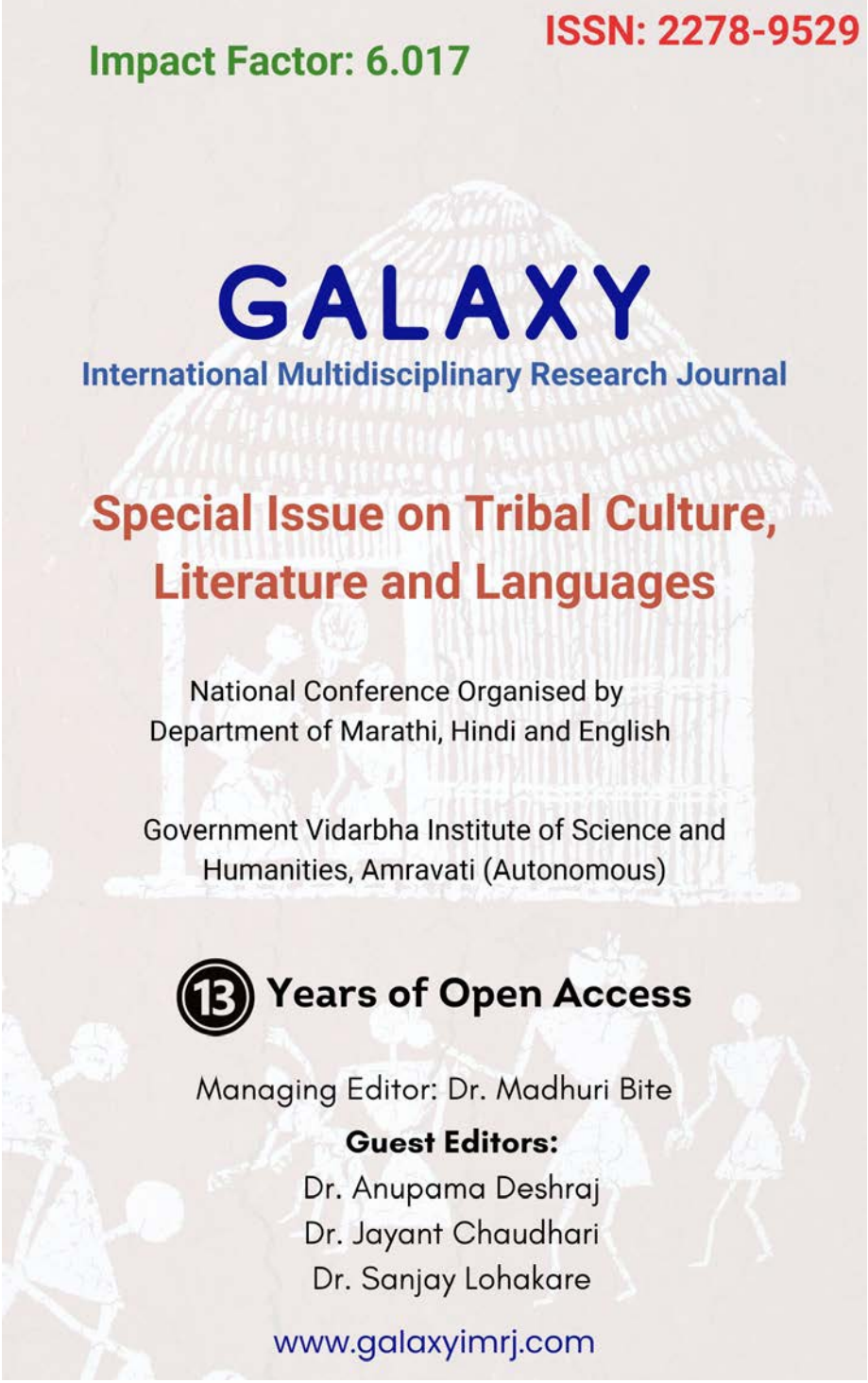

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

बुक्सा जनजाति की संस्कृति अध्ययन

मनोज कुमार
पी - एच .डी – (शिक्षाशास्त्र),
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा महाराष्ट्र (442001)

शोध सारांश

किसी भी समाज के विकास के लिए उस समाज का शिक्षित होना अति आवश्यक है शिक्षा वह संसाधन है जो मनुष्य को समाज मे जीने और रहने को सीखाती एवं उत्तम स्वास्थ्य के साथ - साथ रोजगार मुहैया कराती है जिससे उस समाज की आवश्यताओं की पूर्ति करती है। बुक्सा जनजाति की संस्कृति रीती- रिवाज खानपान एवं रहन - सहन शादी-विवाह रंगरूप वेशभूषा इन सभी पहलू को उल्लेख किया गया है अतः हर एक समाज की अपनी संस्कृति और सभ्यता एवं रीती -रिवाज होती है जिससे हर व्यक्ति अपनी संस्कति सभ्यता को आगे बढ़ाने का कार्य करते है।

प्रस्तुत लेख में बुक्सा जनजाति की संस्कृति का अध्ययन किया गया है जिससे बुक्सा जनजाति को समाज के संवैधानिक अधिकार और समाज के अन्य लोगो के बराबर लाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे बुक्सा जनजाति समाज के अधिकारों के प्रति जागरूक होकर अपनी वर्तमान पीड़ी के लिए निरंतर प्रयास करती है फिर भी अनेक कारण से समाज का विकास विकसित नही होता इस पर लेखक अनेक विचार प्रस्तुत करता है।

मुख्य बिंदु: बुक्सा जनजाति एवं संस्कृति

प्रस्तावना :-

आदिवासी जनजातीय समाज या आदिवासी समाज भारतीय सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण अंग है भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में जनजातियों के लिए 'अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)' शब्दावली का प्रयोग किया गया है अनुसूचित जनजातियाँ पूरे देश में बड़े पैमाने पर मुख्य धारा के समाज से अलग सुदूर जंगलों, पहाड़ी अथवा पठारी क्षेत्रों में फैली हुई है आदिम लक्षण, भौगोलिक अलगाव, विशिष्ट संस्कृति तथा

व्यापक स्तर पर अन्य समुदायों से संपर्क करने में संकोच आदि इन समुदायों की प्रमुख विशेषताएँ है। वर्ष 2011 ई. की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजाति (ST) के व्यक्तियों की कुल संख्या 10.43 करोड़ है जो देश

की कुल जनसंख्या का 8.6% है भारत में जनजातीय समुदाय के लोगो की अत्यधिक बड़ी जनसंख्या है और भारत देश में 50 से भी अधिक प्रमुख जनजाति समुदाय के लोग रहते

उत्तराखंड राज्य :-

देवभूमि उत्तराखंड पर्वतीय राज्य है। इस पर जलवायु की तलीय दशा का सबसे अधिक प्रभाव मिलता है। भागीरथी, अलकनंदा, यमुना, रामगंगा, कोसी और काली नदियों की धाराओं के निचले भागों में घनी आबादी है। इस प्रदेश का मध्यवर्ति भाग सीमावर्ती इलाकों की अपेक्षा घना बसा हुआ है। उत्तराखंड का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारत का इतिहास राज्य के कई स्थानों से प्राचीन ऐतिहासिक अवशेष मिले हैं जिनमें शिलालेख गुहालेख सिक्के लिपियाँ मृदुभांड आदि है जिनके द्वारा उत्तराखंड का इतिहास माना जाता है उत्तराखंड प्राकृतिक रूप से समृद्ध अपनी एक समृद्ध संस्कृति है और सांस्कृतिक पहचान यहाँ की लोककला और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से है जिसके मूल में है यहाँ की जनजातियाँ जो अपनी विशिष्ट जीवन शैली रहन - सहन कला - संगीत व संस्कृति के कारण अपनी पहचान बनाये हुए है। उत्तराखंड की अधिकांश जनसंख्या गावों में रहती है। पहाड़ों में जनसंख्या का घनत्व कम है लेकिन यहाँ इनकी अपनी अलग - अलग सांस्कृतिक पहचान है। जातीय विविधता ने इस सांस्कृति दशा को और समृद्ध बनाया जिसमे सदियों से बसी जनजाति -भोटिया, जौनसारी, थारू, बुक्सा, राजी, शामिल है आर्थिक सामाजिक स्तर पर अलग सांस्कृतिक पहचान होती है। जातीय सम्बन्धों के कारण इनके गैर जनजातियों से भी सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

देवों की इस पवित्र देवभूमि उत्तराखंड की चर्चा इन जनजातियों के बिना अधूरी है।

उत्तराखंड की जनजाति-:

बुक्सा जनजाति उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड राज्य में निवास करती है। मुख्य रूप से यह जनजाति उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिला एवं उत्तराखंड राज्य के देहरादून और नैनीताल जिले में निवासरत है उत्तराखंड के बुक्सा जनजाति की कुल जनसंख्या (46.771) एंव उत्तर प्रदेश में बुक्सा जनजाति की कुल जनसंख्या (4.367) निवास करती है और बुक्सा

जनजाति उत्तराखंड की तीसरी बड़ी जनजाति है। अतःउत्तराखंड राज्य की जनसंख्या वर्ष 2011की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या (1.00.86,292) जिसमे से अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (2,91,903) है।

उत्तराखण्ड में निवासरत् भोटिया, थारू, जौनसारी,बुक्सा एवं राजी को वर्ष 1967 में अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया था। उक्त पांच जनजातियों मे 'बुक्सा' एवं 'राजी' जनजाति आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से अन्य जनजातियों की अपेक्षा काफी निर्धन एवं पिछड़ी होने के कारण उन्हें आदिम जनजाति समूह की श्रेणी में रखा गया

बुक्सा जनजाति: बुक्सा जनजाति, मुख्य रूप से उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के भारतीय राज्यों में रहने वाले आदिवासी या वनवासी हैं। अधिकांशतः जनजाति या आदिवासी समुदाय के लोग जंगलों तथा पहाड़ों में निवास करते हैं. भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए अनुसूचित जनजाति पद का उपयोग किया गया है. बुक्सा जनजाति के लोग अधिकांशतः बाहरी हिमालय की तलहटी क्षेत्र के देहरादून और नैनीताल जैसे जिलों में निवास करती हैं।

बुक्सा जनजातीय उत्तराखण्ड की पाँच जनजातियों में से एक हैं। इनके आवासीय क्षेत्र को 'बुक्सार' कहा जाता है, जो कीलपुरी एवं रूद्रपुर परगना के नाम से जाना जाता है। प्रारंभ में बुक्सा शारदा नदी के किनारे 'बनक्सा' नामक स्थान में, जो कि कीलपुरी परगने में पड़ता है, आकर बसे. 'बुक्सार' में बसने के कारण इन्हें 'बुक्सा' कहा जाने लगा। उत्तरखंड की प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह नैनीताल , हरिद्वार, उधमसिंह नगर, पौड़ी गडवाल तथा देहरादून जिलों की ग्रामीण बस्तियों में बसी है। बुक्सा जनजाति की कुल जनसंख्या का 60% भाग उधम सिंह नगर व नैनीताल जिले में है। बुक्सा जनजाति के क्षेत्रों को 'भोक्सार' कहते है। शारीरिक गठन की दृष्टि से यह कद में छोटे और मध्यम चौड़ी मुखाकृति तथा सामान्य ऊँची नासिका वाले है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक सुन्दर होती है। स्त्रियों के गोले चेहरा गेहुआ रंग, मंगोल नाकनक्श दिखता है। **'विलियम्स क्रुक ने बुक्सा जनजाति की उत्पत्ति के बारे में कहा है कि ए लोग स्वंय को राजपूतों का वंशज मानते है।** कुछ लोगों का मत है कि दक्षिण से आये जबकि कुछ लोग कहते है कि ये उज्जैन के निकट धारा नगरी से आये है। इस जनजाति की पारिवारिक व्यवस्था में स्त्रियों को प्रमुख स्थान है। बुक्सा जनजाति में लड़की परिवार की आर्थिक क्रियाओं में सक्रीय सहभागिता निभाती है। बुक्सा जनजातियों में अभी पश्चात् पद्धति प्रचलित है चाहे व शादी विवाह हो या अन्य कार्यकर्म हो, यहाँ जातीय, बहिगोर्त्रिय विवाह प्रचलित है यहाँ पित्रसत्तात्मक पित्रवंशीय एवं पित्रस्थानीय परिवार पाए जाते है। इस जाति समुदाय

में नातेदारी संबंधित प्रथाएं बहुत महत्वपूर्ण है परिवार की पुत्रवधू अपने ससुर पति के बड़े भाई जेठ से नहीं बोल सकता ना ही उन्हें देखने की इजाजत है लेकिन पति की मृत्यु हो जाने पर व अपने देवर से ही विवाह कर सकती है

बुक्सा जनजाति समुदाय में शंकर जी काली माँ, माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी, भगवान श्री राम एवं कृष्ण जी की विशेष रूप से पूजा की जाति है। बुक्सा जनजाति समाज में काशीपुर की ' माँ बालासुन्दरी देवी' सबसे बड़ी देवी मानी जाति है। और बहुत धूम धाम से पूजा पाठ मनाया जाता है

भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार के माध्यम से कुमाऊँ के बुक्सा एवं गढ़वाल मंडल के मेहरा राजपूतों का डी . एन . ए . टेस्ट कैवाया गया तो यह परिणाम सामने आया की दोनों जातियों का एक डी .एन.ए. है और बुक्सा तथा मेहरा राजपूतसमाज का शैक्षिक , आर्थिक एवं सामाजिक स्तर तथा इनका रहन- सहन, खानपान रीती रिवाज, संस्कृति वेशभूषा सभी विशेषताए सामान है।क्योंकि यह दोनों समाज एक है और इन्हें मेहरा राजपूत एवं बोक्सा दोनों नाम दिए गये है। गढ़वाल मंडल के मेहरा राजपूत जाति को कुमाऊँ मंडल की बुक्सा जाति के साथ 1967 में संवेधानिक रूप से शामिल कर बुक्सा नाम दिया गया है। बोक्सा जनजाति के लोग देहरादून जिला के हरद्वार पौड़ी गढ़वाल उधम सिंह नगर नैनीताल के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है। इस जनजाति के शैक्षिक आर्थिक व सामाजिक रूप से बहुत पिछड़ा होने के कारण इस जाति को संविधान में दिए गये अनुसूचित जनजाति के अधिकारों योजनाओं आदि का ज्ञान नही है। जिससे यह इनका लाभ नही उठा पा रहे है। अशिक्षा ही इसके विकास का मुख्य कारण है। बोक्सा जनजाति को शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कुछ कदम उठाये गये लेकीन इनका प्रचार – प्रसार नही हुआ । 1967 में देहरादून की मेहरा राजपूत जाति को बोक्सा जाति का संवेधानिक दर्जा दिया गया। यह बात इस समाज को अच्छी नहीं लगी और कई जगहों पर इसका अंतर विरोध भी हुआ किन्तु 1976 में पता चला कि हमारी भूमि बिक्री पर सरकार के द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। और बुक्सा समाज के शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक विकास के लिए सरकार द्वारा बहुत सी योजनाएं चलाई जा रही है जिससे बोक्सा समाज का विकास होगा। यह जानकर बुक्सा समाज को ख़ुशी मिली।

बुक्सा जनजाति की भाषा हिंदी और कुमाऊनी का समिश्रण है पर अब जो पढ़े लिखे हैं वह देवनागरी लिपि का ही प्रयोग करते हैं

बुक्सा जनजाति के रीति – रिवाज एवं संस्कृति :-

बुक्सा जनजाति के लोगों की अपनी अलग-अलग रीति - रिवाज, रस्मे तथा संस्कृति होती है। बुक्सा जाति के लोग में शादी- विवाह अपने गौत्र को छोड़कर अन्य गौत्र में शादी करते है घर का मुखिया ही तय कर्ता है की लड़के या

लड़की की शादी - विवाह कहा करनी है। परिवार के अन्य लोगो से भी सहमिति ली जाति हैं तथा लड़का और लड़की को शादी से पहले एक दुसरे से नही मिलते है शादी साधारण तरीके से ही की जाति है। दोनों परिजनों को पंडित द्वारा दिए गये शुभ मुहूर्त पर ही शादी - विवाह करते है। शादी कि तैयारी कुछ दिन पहले से ही शुरू की जाती है। और सभी प्रकार के वस्त्र एवं आभूषण का व्यवस्था किया जाता है। इस समाज में जब रिश्ता तय हो जाता था तो पंडित के द्वरा दिया गया लगन तिथि के अनुसार लगन पत्रिका बनाकर कन्या पक्ष नाई के द्वारा वर पक्ष के घर भेजा जाता जाता है। यह कार्य दोनों पक्षों की सहमिति से होता है। लगन पत्रिका में विवाह की तारिक हल्दी हाथ मेहंदी विवाह लगन का समय आदि अंकित होता है । लगन पत्रिका के अनुसार ही वर व कन्या पक्ष में हल्दी हाथ मेंहदी किया जाता है। हल्दी हाथ मेंहदी करने के लिए ओखली तथा मूसल में डोरी का धागा बाँधा जाता है हल्दी की गाँठ नमक एवं जौ को ओखल में डालकर महिलाओं के द्वारा कुटा जाता है। हल्दी जौ तथा चने को चक्की में पिसकर उसका उबटन बनाया जाता है और इसमें दही तथा तेल मिलाया जाता है। बान (भात्वान) के दिन लड़कें तथा लड़की के परिवार अपने घर पास - पडोसी के पुरुष तथा महिलाएं एकत्रित होती है। लडके तथा लड़की को चौकी पर बैठाया जाता है और उसके शरीर पर उबटन मला जाता है जिससे कि उनका शरीर शुद्ध किया जाता है। महिलाये मंगल गीत गाती है नृत्य करती है लडके तथा लड़की की माँ उनकी आँखों में काजल लगाती है दिया जलाकर थाली में रखकर उनकी आरती उतारी जाती है। विवाह की दिन लड़के तथा लड़की को मंगल स्नान कराया जाता है। लड़की वाले बारात की स्वागत की तैयारी में लग जाते है और लड़के वाले के यहाँ बारात जाने की तैयारी होने लगाती है लड़के को नए वस्त्र व सेहरा पगड़ी आदि पहनकर दूल्हा बना दिया जाता है। महिलाये दूल्हा – दुलहन की सलामती के लिए मंगल गान तथा भगवान से प्रार्थना करती है। सेहरा बंदी के समय बहने अपने भाई (दुल्हे) से नेग मांगती है और दूल्हा सभी प्रथाओ को ध्यान में रखकर शादी कर लेता है

संस्कृति – संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरुप है जो उस समाज के सोचने, समझने,कार्य करने के स्वरुप में अंतरनिहित होता है।

रीतिरिवाज- बुक्सा जनजाति या किसी भी जनजाति समाज की अपनी संस्कृति परम्परा होती है। जिसमें वे निवास करते हैं। इन जनजातीय समुदाय के लोग हिन्दू धर्म को मानते हैं और उनके अनुसार ही मूर्ति पूजा – पाठ अराधना को स्वीकार करते हैं। इनके व्रत व त्योहार हिन्दू धर्म के समान ही होते हैं। जैसे- दीपावली, दशहरा, जन्मष्टमी, इनके खास त्यौहार होते है।

बुक्सा जनजाति के लोग बिना भेदभाव के एक दुसरे के साथ जीवन व्यतीत करते है। "गोत" अथवा "गोत्र'' बुक्सा समाज की व्यवहारिक मूल समाजिक इकाई है। अधिकांशत: संयुक्त परिवार में ही निवास करते है।

निष्कर्ष:-

किसी भी जाति समाज को शैक्षिक सामाजिक एवं उसकी सांस्कृति का विकास अतिमहत्वपूर्ण होता है जनजाति समुदाय में वर्तमान समय के आधुनिकरण की इस दुनिया में बहुत प्रभाव पड़ा है जिससे जनजाति समाज में निरंतर सुधार देखने को मिल रहा है भारत सरकार जनजाति समाज के विकास के लिए अथिक प्रयास कर रही है। अभी वर्तमान में भारत सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 में जनजाति विकास के बारे में उल्लेख किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

भट्ट एम.(2017). बुक्सा जनजाति की सांस्कृतिक सामाजिक समस्या. *रिसर्च क्रोनी कलर इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी पीयर्स रिव्यू जनरल,4*(1),112-114.

सिंह. के. एंव उपाध्याय एन. (2020). बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 8*(11), 3583-3587.

अविदा, एवं भूषण, पी.(2020). उत्तराखंड में बुक्सा जनजाति की संस्कृति. *जनरल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च, 7*(8) ,915-917.

लाल दर्शन (2020),बोक्सा जन जागृति.अखिल भारतीय बोक्सा जनजाति विकास समिति